'हिन्दुस्तान' (दिल्ली) 6-8-1996

कम्बोडिया में गृहयुद्ध भड़कने की आशंका

लगातार ३० साल गृह-युद्ध की त्रासदी झेलते दक्षिण-पूर्व एशियाई देश कम्बोडिया को काफी जद्दोजहद के बाद १९९३ में थोड़ी राहत मिली जब संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों की देखरेख में चुनाव हुए और मिली-जुली सरकार बन गई। सरकार में शामिल दोनों पक्ष यों तो एक-दूसरे के प्रबल विरोधी थे लेकिन चूंकि उन्हें चीन समर्थित शक्तिशाली खमेर रूज छापामारों से मिल कर लड़ना था, इसलिए साझा सरकार बनाने को राजी हो गये। प्रधानमंत्री के दो पद बनाए गये—एक पद मिला वियतनाम समर्थित कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हुन सेन को और दूसरा मिला कम्बोडिया के सबसे पुराने शासक राजकुमार नरोत्तम सिंहनुक के पुत्र राजकुमार रणरिद्ध को। बाकी मंत्रियों के पदों में हुन सेन की पीपुल्स पार्टी और सिंहनुक की फन्सीन्पैक को बराबर की हिस्सेदारी दी गई। लेकिन सरकार के गठन के ही समय जो असंतोष उभर कर सामने आया वह खत्म होने के बजाए बढ़ते-बढ़ते आज इस स्थिति में आ गया है कि फिर से गृह युद्ध का माहौल बन गया है।

सरकार में शामिल दोनों पक्षों के बीच बढ़ता तनाव जल्द ही वो दिन लाने वाला है जिससे उबारने की कोशिश १९९३ में की गई थी। श्री हुन सेन को रणरिद्ध के समर्थकों द्वारा तखता पलट करके उनकी पार्टी को सत्ता से अलग करने का षड्यंत्र किये जाने की आशंका है। उन्होंने कहा है कि पार्टी के लोगों को सावधान रहने को कह दिया गया है और राजकुमार रणरिद्ध को भी चेतावनी दे दी गई है कि इस तरह की किसी योजना की गंध मिलते ही सेना कमान संभाल लेगी। रक्षा और आंतरिक सुरक्षा मंत्रालय भी अपने जिम्मे होने के कारण हुन सेन की सरकार में पकड़ काफी मजबूत है। राजकुमार रणरिद्ध का कहना है कि वे तो कहने भर के लिए प्रधानमंत्री हैं, वास्तव में उनके हाथ में है कुछ नहीं। उनका आरोप है कि शीर्ष मंत्रालय हुन सेन ने अपने पास रखा है और यह मुद्दा १९९३ में ही उन्होंने उठाया था, जब संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षक मौजूद थे। रणरिद्ध के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों ने इस मामले को यह कह कर टाल दिया कि इसका हल आपसी राय-मशविरे से निकाला जाए, लेकिन आज तक हुन सेन से सत्ता में उनकी हिस्सेदारी नहीं होने दी, न ही किसी महत्वपूर्ण फैसले से पहले उनसे पूछा जाता। रणरिद्ध का यह भी आरोप है कि हुन सेन ने महत्वपूर्ण मंत्रालय अपनी पार्टी के लोगों को सौंपा है और उनकी पार्टी के मंत्रियों की संख्य भी ज्यादा है। फन्सीरिक को कहने भर के लिए प्रतिनिधित्व दिया गया है।

कम्बोडिया के सबसे निकटस्थ पड़ोसी थाईलैंड के अखबार 'बैंकाक टाइम्स' ने दोनों पक्षों के अत्यंत विश्वसनीय सूत्रों के हवाले से यह वृतांत छापा है। थाईलैंड की कम्बोडिया के अंदरूनी मामले में दखलंदाजी रही है। १९७८ के दिसम्बर में जब वियतनामी सेना की बदौलत हुन सेन ने खमेर रूज शासक पोल पोट को अपदस्थ किया तो पोल पोट ने थाईलैंड में शरण ली और १९७५ में पोल पोट द्वारा अपदस्थ किये जाने के बाद राजकुमार नरोत्तम सिंहनुक के नजदीकी संबंधियों ने भी थाईलैंड भाग कर ही अपनी जान बचाई थी। उसके बाद खमेर रूज छापामारों के लिए चीन से हथियारों की आपूर्ति थाईलैंड के जरिए होती रही जो आज भी बदस्तूर कायम है।

उधर ७३ वर्षीय राजकुमार सिंहनुक की तबियत बिगड़ती जा रही है, वे अब अपने देश के लिए कुछ करने की स्थिति में नहीं है, इससे उनकी पार्टी के लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। क्योंकि श्री सिंहनुक को कम्बोडिया में अनुकूल स्थिति होने के प्रयासों में अपने व्यक्तित्व की बदौलत भरपूर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मिला। स्वतंत्र विचारधारा का कम्बोडिया का सर्वाधिक प्रचारित पत्र 'नाम्पेन्ह पोस्ट' के मुताबिक अंतिम समय में अपने देश को फिर से पहले वाली हालत में जाते देख सिंहनुक की तकलीफ और बढ़ती जा रही है। इसलिए खमेर रूज ने दक्षिण कम्बोडिया और अपने प्रभाव वाले अन्य इलाकों में पुलिस व सैनिक ठिकानों पर हमले तेज कर दिये हैं।

इस बीच पोल पोट की मृत्यु की खबर से खमेर रूज छापामारों का मनोबल कमजोर अवश्य हुआ, लेकिन एक कमांडर द्वारा कम्बोडिया सरकार की ओर से उड़ाई गई अफवाह बता कर खंडन किये जाने से छापामार अपने अभियान में जुट गये हैं। १९९३ से पहले जब पूरी तरह वियतनामी सेना की बदौलत हुन सेन के नेतृत्व में सरकार चल रही थी, तब भी सरकारी सैनिकों के लिए खमेर रूज हमलों का करारा जवाब देना महंगा पड़ता था और उस स्थिति में आज भी कोई अंतर नहीं पड़ा है।

शीत युद्ध के दौरान अमरीका और सोवियत संघ ने अपना वर्चस्व कायम करने की लड़ाई में जिन देशों को मोहरा बनाया उसमें एक कम्बोडिया भी है। वियतनाम की शर्मनाक हार के बाद अमरीका ने इस क्षेत्र की राजनीति से अपने को अलग कर लिया और उसके बाद मामला सोवियत संघ और चीन के बीच रह गया। चीन का हस्तक्षेप बिल्कुल सीधा रहा और सोवियत संघ की तूती वियतनाम के जरिए कायम रही। सोवियत संघ के बिखर जाने के बावजूद कम्बोडिया में दबंग हैसियत कम्युनिस्टों की ही है।

दरअसल १९७९ में खमेर रूज शासन के पतन के बाद से कम्बोडिया में चीन की एक नहीं चल पायी, जबकि चीनी शासकों ने राजकुमार सिंहनुक के भी बड़े शुभचिंतक होने का स्वांग रचा, क्योंकि श्री सिंहनुक की अंतर्राष्ट्रीय छवि अच्छी रही है और उन्हें राष्ट्राध्यक्ष बनाने पर किसी देश को आपत्ति नहीं होती तथा उसी बहाने १९७५ की तरह फिर से खमेर रूज राजकुमार सिंहनुक की कमजोरी का फायदा उठा कर कम्बोडिया पर कब्जा कर लेता। १९७५ से १९७८ तक का खमेर रूज शासनकाल का इतिहास खून से रंगा है।

□ शशिधर खां